Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23064
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23064

CONFERENCE PAPER

पंडित मणिलाल नाग की शिष्य परंपरा: एक अध्ययन

शोधकर्ता नीतिका रानी

1. पंजाबी यूनिवर्सिटी पटिआला.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
पंडित मणिलाल नाग, शिष्य परंपरा, 300 वर्ष पुरानी विष्णुपुर घराने की परंपरा का विकास

Abstract

भारतीय सभ्यता में गुरु–शिष्य परंपरा प्राचीन समय से प्रचलित रही है और सदियों से मनुष्य को सही मार्ग दिखाती आ रही है। जहाँ गुरु प्रकाश बनकर अज्ञान के अंधकार को दूर करता है, वहीं शिष्य दीपक बनकर उस ज्ञान को प्रकाशित करता है। डॉ. प्रेम प्रकाश सिंह ने अपने संस्कृत–पंजाबी कोश में गुरु के विभिन्न अर्थ बताए हैं, जैसे— पिता, सम्मानयोग्य महान व्यक्ति, अध्यापक, शिक्षक, आचार्य, स्वामी, ब्रहस्पति, नए सिद्धांत का स्थापक तथा संचालक। पं. मणिलाल नाग ने लगभग 300 वर्षों से चली आ रही विष्णुपुर घराने की वादन परंपरा को न केवल संभालकर सुरक्षित रखा, बल्कि गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से उसका विस्तार भी किया। पं. मणिलाल नाग के अनुसार—"एक शिष्य के जीवन में गुरु का अत्यंत महत्त्व होता है, क्योंकि वही अपने शिष्य के भीतर छिपी हुई प्रतिभा को उजागर करने की शक्ति रखता है। मेरे पिता (पं. गोकुल नाग) ने मुझे बहुत कठोर साधना करवाई, जिसके परिणामस्वरूप मैंने विश्व स्तर पर सितार वादन का प्रचार और प्रसार किया।" पं. मणिलाल नाग ने अपने गुरु से प्राप्त विद्या तथा कलात्मक विरासत को निष्ठा और गंभीरता के साथ शिष्यों तक प्रसारित किया। उनकी शिष्य परंपरा ने अपने गुरु की वादन-शैली की विशेषताओं—जैसे ध्रुपद अंग के साथ आलाप, जोड़ आलाप में विभिन्न बोलों का प्रयोग, आकर्षक गतें, लय और लयकारी का कुशलतापूर्वक उपयोग, तोड़ों का सुंदर प्रयोग तथा भावपूर्ण झाले के वादन को विधिवत ढंग से विशेष महत्व दिया। पं. मणिलाल नाग ने गुरु के रूप में अनेक

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- शोधकर्ता नीतिका रानी
Address:-पंजाबी यूनिवर्सिटी पटिआला.

शिष्यों को संगीत की विधिवत शिक्षा प्रदान की, जो वर्तमान समय में हिंदुस्तानी संगीत के प्रचार–प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। पं. मणिलाल नाग के शिष्यों की सूची अत्यंत विस्तृत है। अब तक उन्होंने सैकड़ों शिष्यों को संगीत की शिक्षा दी है, जिनमें प्रमुख हैं—श्रीमती सैममित्रा लाहिरी (कलकत्ता), श्री बौरी बंधु सेठी (भुवनेश्वर), श्रीमती मीता नाग (कलकत्ता), पंडित देबोजीत चक्रवर्ती (राजस्थान), सुब्रता डे (नई दिल्ली), समीर विश्वास (कलकत्ता), अमिता चटर्जी (नई दिल्ली), अभिषेक मलिक (कलकत्ता), इंद्रजीत बनर्जी (यू.एस.ए.), तेजूकाटो (जापान), शुनीची सवादा (जापान), सपना हाजरिका (गुवाहाटी), शुभंकर हाजरिका (गुवाहाटी), प्रसन्ना थोकचोम (यू.एस.ए.), निवेदिता घोष (कलकत्ता), विश्वास सामंता (कलकत्ता) आदि।

निष्कर्ष:-पं. मणीलाल नाग की शिष्य-परंपरा भारतीय शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य प्रणाली से जुड़ी दार्शनिक सोच, सौंदर्यात्मक समझ और मधुरता के सिद्धांतों की स्पष्ट अभिव्यक्ति के रूप में सामने आती है। पं. नाग ने अपने गुरु से प्राप्त संगीतात्मक ज्ञान को निरंतर साधना, गहन अभ्यास तथा शास्त्रीय नियमों को आधार बनाकर अनुशासन में रहते हुए अपने शिष्यों में संचारित किया। इस प्रक्रिया के दौरान रागों के स्वरूप की शुद्धता, लयात्मक संतुलन तथा मिज़राब वादन की तकनीकी निपुणता को प्राथमिकता दी गई, जिसके कारण शिष्य अपनी कलात्मक पहचान बनाने में सफल हुए। शिष्यों में स. सैमित्रा लाहिड़ी, हेम हरमोनिका, स. बैरी बंद्योपाध्याय, इंद्रनाथ कुंवर, सुब्रता डे, पं. देबोजीत चक्रवर्ती, मधुश्री मीता नाग, तेजु कातो, सुनीति स्वाहा आदि ने गुरु परंपरा की मर्यादा को बनाए रखते हुए अपने व्यक्तिगत अनुभव, बौद्धिक दृष्टि और रचनात्मक संवेदना के माध्यम से नए प्रयोग किए।

Introduction:-

भारतीय सभ्यता में गुरु-शिष्य परंपरा प्राचीन समय से प्रचलित है और सदियों से मनुष्य को सही राह दिखाती आ रही है। जहाँ गुरु प्रकाश बनकर अज्ञान के अंधकार को दूर करता है, वहीं शिष्य दीपक बनकर उस ज्ञान को प्रकाशित करता है। डॉ. प्रेम प्रकाश सिंह ने अपने संस्कृत-पंजाबी कोश में 'गुरु' के विभिन्न अर्थ बताए हैं जैसे— पिता, सम्मान योग्य व्यक्ति, अध्यापक, शिक्षक, आचार्य, स्वामी, बृहस्पति, नए सिद्धांत का स्थापक और संचालक।"1 गुरु ऐसा विद्वान और बुद्धिमान व्यक्ति होता है जो उपलब्ध ज्ञान को पहले आत्मसात करता है। इसके बाद अर्जित ज्ञान को अपने चिंतन के माध्यम से शिष्यों तक पहुँचाता है। गुरु का दर्जा परमात्मा की देन होने के साथ-साथ कठोर संघर्ष द्वारा प्राप्त होता है। यदि किसी गुरु के जीवन पर दृष्टि डाली जाए तो पता चलता है कि उसने अपने जीवन का एक विशाल हिस्सा अथाह मेहनत, अनुशासित साधना और निरंतर तपस्या के माध्यम से अपनी कला को निखारने में समर्पित किया होता है। इस कला की विरासत को वह अपने शिष्यों के माध्यम से अगली पीढ़ी तक प्रसारित करता है। पंडित मणिलाल नाग ने 300 वर्षों से चली आ रही विष्णुपुर घराने की वादन परंपरा को न केवल संभालकर रखा बल्कि गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से उसका प्रचार-प्रसार भी किया है। पंडित मणिलाल नाग के अनुसार, "एक शिष्य के जीवन में गुरु का बहुत महत्व होता है, जो अपने

शिष्य के अंदर छिपी हुई प्रतिभा को उजागर करने की शक्ति रखता है। मेरे पिता (पं. गोकुल नाग) ने मुझे बहुत कठोर साधना करवाई, जिसके परिणामस्वरूप मैंने विश्व में सितार वादन का प्रचार और प्रसार किया।"2 पंडित मणिलाल नाग ने अपने गुरु से प्राप्त विद्वता और कलात्मक विरासत को निष्ठा और गंभीरता के साथ शिष्यों तक पहुँचाया है। उनकी शिष्य परंपरा ने अपने गुरु की वादन शैली की विशेषताओं को अपनाया, जैसे— ध्रुपद अंग के साथ आलाप, जोड़ आलाप में विभिन्न बोलों का प्रयोग, आकर्षक गतें, लय और लयकारी का कुशल प्रयोग, तोड़ों का सुंदर प्रयोग आदि।सितार वादन को विधिवत ढंग से सँवारने को विशेष महत्व दिया गया है। आपने गुरु के रूप में अनेक शिष्यों को संगीत की शिक्षा दी है, जो वर्तमान समय में हिंदुस्तानी संगीत के प्रचार-प्रसार में सक्रिय विदुषीभूमिका निभा रहे हैं। मीता नाग (पं. मणिलाल नाग की सुपुत्री) बताती हैं—"मेरे पिता जी ने हर प्रकार के विद्यार्थियों को बिना किसी भेदभाव के सितार वादन की शिक्षा प्रदान की है। मैं (मीता नाग) प्रायः पिता जी के शिष्यों के साथ बैठकर सितार वादन की शिक्षा प्राप्त करती थी, क्योंकि पिता जी का मानना था कि मेरे लिए सभी समान हैं—चाहे वह शिष्य हों या अपना संतान।"3 पं. मणिलाल नाग के शिष्यों की सूची बहुत लंबी है। अब तक उन्होंने सैकड़ों शिष्यों को संगीत की शिक्षा दी है, जैसे—स. सैम्मित्रा लाहिरी (कोलकाता), स. बौरी बंधु सेठी (भुवनेश्वर), विदुषी मीता नाग (कोलकाता), पंडित देबोजीत चक्रवर्ती (राजस्थान), सुब्रता डे

(नई दिल्ली), समीर विश्वास (कोलकाता), अमिता चटर्जी (नई दिल्ली), अभिषेक मलिक (कोलकाता), समन्या सरकार (कोलकाता), इंद्रजीत बनर्जी (यू.एस.ए.), तेजूकाटो (जापान), शुनीची सवादा (जापान), सपना हज़ारिका (गुवाहाटी), शुभंकर हज़ारिका (गुवाहाटी), प्रसन्ना थोकचोम (यू.एस.ए.), निबेंदिता घोष (कोलकाता), विश्वास सामंता (कोलकाता) आदि। प्रस्तुत रिसर्च पेपर में उपर्युक्त शिष्यों में से कुछ ऐसे शिष्यों का चयन किया गया है, जो पंडित मणिलाल नाग से वादन संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के साथ-

साथ उसके प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है:-

• हेम हज़ारिका (प्रख्यात एवं नए साज निर्माता)
• स. प्रो. बौरी बंधुसेठी (प्रख्यात शिष्या)
• इंद्र नाथ कोंवर (सितार वादक एवं लेखक)
• विदुषी मीता नाग (सितार वादिका एवं प्रचारक)
• पं. देबोजीत चक्रवर्ती (अध्यापक)
• सुब्रता डे (कलाकार एवं प्रचारक)

हेम हज़ारिका:-

हेम हज़ारिका का जन्म 1 मार्च 1950 को डिब्रूगढ़ के कस्बे बोकपारा (असम) में हुआ। इनके पिता का नाम भाबाकांता हज़ारिका तथा माता का नाम सर्वेश्वरी हज़ारिका था। हेम हज़ारिका ने शोधार्थी से वार्तालाप करते हुए बताया—"मेरे पिता आध्यात्मिक प्रवृत्ति के होने के साथ-साथ संगीत के प्रति गहरी रुचि भी रखते थे, जिसके कारण वे प्रायः कीर्तन के श्लोकों का सुरमयी उच्चारण किया करते थे।"4 1966 में हेम हज़ारिका ने दसवीं कक्षा की शिक्षा प्राप्त करने के बाद 1969 में गिटार वादक चंचल डे से गिटार की शिक्षा प्राप्त की। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, "हेम हज़ारिका ने डिब्रूगढ़ की सितार वादिका श्रीमती नीलिमा बराठाकुर से सितार वादन की शिक्षा प्राप्त की।"5 सितार वादन की विधिवत शिक्षा प्राप्त करने की लालसा ने उन्हें विष्णुपुर घराने के सुप्रसिद्ध सितार वादक पं. मणिलाल नाग से मिलवाया। हेम हज़ारिका ने 8 वर्षों तक पं. नाग से सितार वादन की विधिवत शिक्षा पूर्ण निष्ठा और अनुशासन के साथ प्राप्त की। हेम हज़ारिका के अनुसार— "मेरे गुरुजी (पं. मणिलाल नाग) ने मुझे ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए अनेक प्रयास किए, जो केवल एक सच्चा गुरु ही कर सकता है।"6

वादन शैली:-

हेम हज़ारिका ने पं. मणिलाल नाग से सितार वादन की शिक्षा प्राप्त करते हुए सितार की विभिन्न तकनीकों को आत्मसात किया, जिनमें ध्रुपद अंग के साथ आलाप वादन, विभिन्न प्रकार की लयकारियाँ, गमक, मीड आदि का प्रयोग शामिल है। "पं. मणिलाल नाग ने हमें स्व-रचित बंदिशें तैयार करने की प्रेरणा और प्रशिक्षण दिया, जो हमारे लिए अत्यंत लाभदायक और मार्गदर्शक सिद्ध हुआ।"7 उन्होंने घराने की परंपरा और अपनी स्वतंत्र सोच के समन्वय के साथ सितार वादन किया।

संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए कार्य

कोलकाता में कई महत्वपूर्ण प्रस्तुतियों के बाद हेम हज़ारिका पुनः असम लौट आए। यहाँ उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाई। आपने आकाशवाणी (ऑल इंडिया रेडियो) के माध्यम से शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय सितार वादन की प्रस्तुतियाँ दीं। आकाशवाणी, गुवाहाटी से आपको 'बी हाई ग्रेड' कलाकार के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। शुभांकर हज़ारिका द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार—"हेम हज़ारिका ने कई प्रसिद्ध बॉलीवुड गायकों तथा असम के नामी गायकों के साथ संगतकार के रूप में सितार वादन किया, जैसे— सुश्री लता मंगेशकर, आशा भोसले, कुमार सानू, डॉ. भूपेन हज़ारिका, सुश्री खागेन महंता, पुलक बनर्जी तथा ज़ुबिन गर्ग आदि। हेम हज़ारिका असम के पहले कलाकार हैं जिन्होंने शास्त्रीय संगीत कैसेट 'क्लासिकल फ्रेग्रेंस' में सितार वादन

किया तथा उपशास्त्रीय संगीत की एल्बम 'गोल्डन मोमेंट्स' में हेम हज़ारिका और दीपक शर्मा द्वारा सितार और बांसुरी की जुगलबंदी प्रस्तुत की गई। उन्होंने अनेक शास्त्रीय ऑर्केस्ट्रा का निर्देशन भी किया, जिनमें 2010 में श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी में सौ सितारों वाला ऑर्केस्ट्रा प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त रवींद्र भवन, गुवाहाटी में पंडित रवि शंकर की जन्मशताब्दी के अवसर पर 50 सितारों का ऑर्केस्ट्रा भी प्रस्तुत किया।"8

"हेम हज़ारिका ने 1995 में 'तालीम' नामक संस्था की स्थापना की, जिसके माध्यम से आज सैकड़ों विद्यार्थी गुरु-शिष्य परंपरा में रहकर सितार, वायलिन, बांसुरी तथा शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।"9 हेम हज़ारिका के एक इंटरव्यू से प्राप्त जानकारी के अनुसार— "2017 में हेम हज़ारिका ने 'हेम वीणा' का निर्माण किया, जिसे सितार और गिटार के संयोजन से तैयार किया गया है। इस वाद्य पर पर्दों को गिटार की तरह अर्ध-गोलाकार रूप में स्थापित किया गया है। हेम हज़ारिका ने लंबे प्रयोगों के उपरांत 'हेम वीणा' बनाने में सफलता प्राप्त की।"10 हेम हज़ारिका ने नए राग 'कलामोहिनी' की रचना भी की। शुभांकर हज़ारिका ने शोधार्थी को बताया—"मेरे पिता (हेम हज़ारिका) ने 'ओइक्योतान' (Oikyotaan) पुस्तक की रचना 2017 में की। इस पुस्तक में कई रागों की नोटेशन दी गई है, जिन्हें गायन, वादन तथा ऑर्केस्ट्रा प्रस्तुति के लिए उपयोगी बनाया गया है।"11 यह पूरे उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में राग-आधारित ऑर्केस्ट्रा से संबंधित पहली पुस्तक है। हेम हज़ारिका के पुत्र शुभांकर हज़ारिका (जो पं. मणिलाल नाग के शिष्य भी हैं) संगीत के क्षेत्र में सितार वादन के माध्यम से अपनी पहचान बनाने में सक्रिय हैं।

स्व. प्रोफेसर बौरी बंधु सेठी:-

प्रो. बौरी बंधु सेठी का जन्म 3 नवंबर 1951 को उड़ीसा (ओडिशा) के गंजाम ज़िले के आसीका नामक गाँव में हुआ। 6 वर्ष की आयु में उनकी आँखों की रोशनी चली गई, परंतु संगीत के प्रति उनके रुझान को देखते हुए बैरी बंधु को गंजाम ज़िले के कबीसूर्यनगर स्थित गांधी संगीत कलामंदिर में वादन संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रवेश दिलाया गया। यह कलामंदिर आचार्य ताम्रणी चरण पातर (उड़ीसा के संगीतज्ञ, गुरु, गायक, विद्वान, कवि और बीनकार) द्वारा संचालित किया जाता था। 1961 में उन्होंने संगीत (गायन एवं वादन) की औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय में प्रवेश लिया। एक कलाकार के रूप में उनके जीवन में नया मोड़ उस समय आया जब 1965 में उन्होंने उत्कल संगीत महाविद्यालय (भुवनेश्वर) के पं. गजानन नंदी से सितार वादन की शिक्षा प्राप्त की। सितार को गहराई से जानने की इच्छा उन्हें प्रसिद्ध सितार वादक पं. मणिलाल नाग के पास ले गई। प्रो. बैरी बंधुसेठी ने 1971 में प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से 'संगीत प्रवीण' की डिग्री प्राप्त की।

वादन शैली:-

स. बौरी बंधु ने अपने गुरु पं. मणिलाल नाग से सितार वादन की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने गुरु परंपरा के अनुरूप कोमल ऋषभ वाले सितार का वादन किया। बागेश्वरी सेठी (बैरी बंधु की पुत्री) ने शोधार्थी से वार्तालाप करते हुए बताया— "मेरे पिता जी ने अपना सितार वादन तंत्रकारी और गायकी अंग के समन्वय के साथ किया। उनकी संगीतात्मक अभिव्यक्ति तकनीकों के सुसंगत और सूक्ष्म प्रयोग द्वारा परिभाषित होती है।"12 जीवन प्रकाश घोष के अनुसार—"पं. मणिलाल नाग बैरी बंधु से अत्यंत स्नेह करते थे और कहते थे कि बैरी बंधु ने नेत्रहीन होने के बावजूद भी सितार के पर्दों को भली-भांति समझा और स्वरों की शुद्धता को बनाए रखा।"13

प्रस्तुतियाँ:-

उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो के राष्ट्रीय कार्यक्रम (1991), संगीत नाटक अकादमी के संगीत सम्मेलन (1992 एवं 1995) तथा कला विकास केंद्र के भारत महोत्सव—ऑल इंडिया रेडियो (1998) में सितार वादन की प्रस्तुतियाँ दीं। 2002 में अमेरिका से आमंत्रण प्राप्त होने पर उड़ीसा सोसाइटी के माध्यम से उन्हें अमेरिका जाकर सितार वादन की प्रस्तुतियाँ देने का अवसर प्राप्त हुआ।1975 में स. बौरी बंधु को ऑल इंडिया रेडियो, भुवनेश्वर की कलाकार के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। 1979 में उन्हें संगीत महाविद्यालय,

भुवनेश्वर में व्याख्याता (लेक्चरर) के रूप में नियुक्त किया गया। 1993 में उन्हें ऑल इंडिया रेडियो, भुवनेश्वर से 'ए ग्रेड' कलाकार के रूप में सम्मानित मान्यता प्राप्त हुई। इसके साथ ही प्रो. बौरी बंधु ने संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए सराहनीय कार्य किए। उन्होंने संगीत भारती (भुवनेश्वर) के संस्थापक सदस्य के रूप में कार्य किया, जिसे प्राचीन कला केंद्र, चंडीगढ़ से मान्यता प्राप्त थी। वे संगीत नाटक अकादमी, भुवनेश्वर (उड़ीसा) के सदस्य, उड़ीसा एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड (भुवनेश्वर) तथा उड़ीसा ब्लाइंड फाउंडेशन (बरहामपुर) के संस्थापक सदस्य भी रहे।

पुरस्कार:-

संगीत के प्रति स. बौरी बंधु के योगदान को देखते हुए उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जैसे—

सुर श्रृंगार संसद (मुंबई) द्वारा 'सुरमणि अवॉर्ड' (1977), उड़ीसा लोकवी पद्मनाभ समिति अवॉर्ड (1995), नेशनल काउंसिल ऑफ एशियन द्वारा 'तानसेन म्यूजिक अवॉर्ड' (2002), बरहामपुर (उड़ीसा) से 'बसंती मेमोरियल अवॉर्ड' (2003) आदि। इसके अतिरिक्त बौरी बंधु ने अपने गुरु पं. मणिलाल नाग से प्राप्त संगीत शिक्षा को अपने शिष्यों तक पहुँचाया, जिनमें सुब्रता डे, जीवन प्रकाश घोष तथा सुबीर मित्रा आदि प्रमुख हैं। बौरी बंधु सेठी का 3 नवंबर 2012 को देहांत हो गया।

इंदर नाथ कोंवर:-

इंदर नाथ कोंवर उत्तर-पूर्व भारत की हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत परंपरा के प्रसिद्ध सितार वादक हैं। उनका जीवन गुरु-शिष्य परंपरा, निरंतर साधना और कलात्मक अनुशासन का प्रतीक है। इंदर कोंवर का जन्म 16 अगस्त 1952 को असम राज्य के डिब्रूगढ़ जिले के अंतर्गत गोपुरिया कोंवर गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम श्री पवना नाथ कोंवर तथा माता का नाम श्रीमती मालती कोंवर था। 1970 में उन्होंने आर.सी. अग्रवाल हाई स्कूल, मोरन से एच.एस.एल.सी. (High School Leaving Certificate) की परीक्षा उत्तीर्ण की।

संगीत की तालीम और गुरु-परंपरा:-

इंदर नाथ कौर की संगीत साधना हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य परंपरा के अनुसार विकसित हुई। वर्ष 1968 में इन्होंने गायन तथा वादन संगीत की शिक्षा पंडित अमर चक्रवर्ती से प्राप्त की। इसके पश्चात 1974 से 1977 तक इन्होंने सितार वादन की शिक्षा भठाकुर, डिब्रूगढ़ से प्राप्त की। इसके उपरांत 1977 में संगीत साधक पंडित मणीलाल नाग से सितार की शिक्षा लेना प्रारंभ किया, जो वर्तमान समय तक निरंतर चलती रही है।

अकादमिक उपाधियाँ एवं प्रमाणिकता:-

इंदर नाथ कोंवर र ने अपनी संगीत योग्यता की प्रमाणिकता हेतु कई मान्य संस्थाओं की प्रतियोगी परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। वर्ष 1978 में इन्होंने प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से सितार में "संगीत प्रभाकर" की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1979 में अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई से "संगीत विशारद" (सितार) की उपाधि हासिल की। वर्ष 1992 में सर्वभारतीय संगीत एवं संस्कृति परिषद, कोलकाता से सितार (एम. म्यूजिक) में "संगीत रत्न" की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की।इंदर नाथ कोंवर भारतीय संगीत क्षेत्र में एक प्रमुख संगीतकार, संगीत अध्येता तथा संगीत शास्त्र के विद्वान हैं। अपनी संगीत यात्रा के दौरान इन्होंने ऑडिशन बोर्ड, आकाशवाणी (नई दिल्ली) तथा सर्वभारतीय संगीत एवं संस्कृति परिषद की कार्यकारी समिति में भी सक्रिय भूमिका निभाई।(कोलकाता) में सदस्य के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इंदर नाथ कौर को डॉ. भूपेन हजारिका के अध्ययन केंद्र, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय की चयन समिति में विशेषज्ञ सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया।

प्राप्त सूचना के अनुसार, "इंदर नाथ कोंवर ने भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक सराहनीय प्रयास किए। इन्होंने 1980 में मरांछा म्यूजिक कॉलेज (डिब्रूगढ़) तथा 2004 में अपर असम म्यूजिक कॉलेज (मोरान) की स्थापना की। वर्तमान समय में इंदर नाथ

कौर इन दोनों संस्थाओं के प्रिंसिपल एवं डायरेक्टर के रूप में कार्य कर रहे हैं।"14 कौशिक कोंवर (इंदर नाथ कोंवर के पुत्र) द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, इन्होंने डिब्रूगढ़, असम से कई पुस्तकों का प्रकाशन करवाया, जैसे— संगीत झंकार भाग 1 (2002), संगीत झंकार भाग 2 (2003), संगीत शास्त्र शिक्षा (2005), श्रुति (2012), कंठ संगीत विशारद (2019)

पुरस्कार:-

संगीत के प्रति इनके योगदान को देखते हुए इन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनकी सूची इस प्रकार है— जोरहाट थिएटर, जोरहाट (1997), मानव कल्याण सेवा संस्था, डिब्रूगढ़ (2002), सिम्फनी, डिब्रूगढ़ (2002), संगीत मरांछा महाविद्यालय, डिब्रूगढ़ (2010), सर्वभारतीय संगीत एवं संस्कृति परिषद द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड, कोलकाता (2025) आदि।

विदुषी मीता नाग:-

विदुषी मीता नाग अनुभवी एवं प्रसिद्ध सितार वादक मनिलाल नाग की पुत्री तथा संगीताचार्य गोकुल नाग की पौत्री हैं। इस परिवार का संबंध 300 वर्ष पुरानी विष्णुपुर परंपरा से है। यदि वंश परंपरा की बात की जाए तो मीता नाग अपने घराने की छठी पीढ़ी की सितार वादिका हैं।मीता नाग का जन्म 2 जनवरी 1969 को माता श्रीमती रीटा नाग के घर हुआ। घर में संगीत का वातावरण होने के कारण इन्होंने मात्र 4 वर्ष की आयु में अपनी माता से सितार की शिक्षा प्रारंभ की, जो स्वयं पं. गोकुल नाग की शिष्या रही हैं। इसके बाद इन्होंने अपने पिता पं. मणिलाल नाग के मार्गदर्शन में विधिवत रूप से सितार वादन की उच्च शिक्षा प्राप्त की। विदुषी मीता नाग के अनुसार—"मेरे पिता की शिक्षा-प्रणाली अत्यंत कठोर थी। विशेष रूप से सितार की प्रारंभिक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता था, जैसे— पलटा, मींड, गमक, बोल, झाला आदि। पिताजी पहले द्रुत गत, तानकारी, गतकारी आदि सिखाते थे, उसके बाद विलंबित गतों की शुरुआत करवाते थे।"15 विदुषी मीता नाग ने 10 वर्ष की आयु में अपनी पहली मंच प्रस्तुति कोलकाता में आयोजित अंतरराष्ट्रीय बाल दिवस समारोह (1979) में दी, जिसके लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा 'जूनियर राष्ट्रीय प्रतिभा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।इसके पश्चात इन्होंने एम.ए. तथा एम.फिल. की शिक्षा अंग्रेज़ी विषय में प्राप्त की।

वादन शैली:-

विदुषी मीता नाग ने विष्णुपुर घराने की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मजबूत कंठस्वर और गहन मींड प्रधान सितार का वादन किया। इन्होंने अपने पिता की भाँति आलाप वादन में ध्रुपद अंग को प्रमुखता देते हुए दो तुंबों वाली सितार का प्रयोग किया है।विदुषी मीता नाग ने जोड़ आलाप के बोलकारी अंग में मिज़राब के विभिन्न बोलों को अत्यंत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। शोधार्थी से वार्तालाप करते हुए उन्होंने बताया—"पिताजी ने मुझे घंटों बैठाकर रियाज़ करवाया है, क्योंकि उन्होंने स्वयं भी बहुत रियाज़ किया है। संगीत की शिक्षा देते समय पिताजी समझाते थे कि हम एक ही स्वर की बढ़त करते हुए अलग-अलग भावों को कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं।"16

मंच प्रस्तुतियाँ:-

विदुषी मीता नाग ने विभिन्न संगीत कार्यक्रमों में स्वतंत्र रूप से तथा अपने पिता Manilal Nag के साथ जुगलबंदी के रूप में अनेक मंच प्रस्तुतियाँ दी हैं, जैसे— 'डोवर लेन यंग टैलेंट', कोलकाता, 'संगीत सम्मेलन' (2013), 'उत्तरपाड़ा संगीत चक्र सम्मेलन', कोलकाता (2013), 'सॉल्ट लेक संगीत कॉन्फ्रेंस' (अनेक बार), 'दरबार फेस्टिवल', लंदन (2015), 'संगीत पिपासा', कोलकाता, 'सुर यात्रा', मुंबई विदुषी मीता नाग ने स्वतंत्र वादन के साथ-साथ अपने पिता मनिलाल नाग के साथ अनेक प्रतिष्ठित आयोजनों में प्रस्तुति दी, जैसे—संकट मोचन मंदिर , वाराणसी में 'संकट मोचन संगीत सम्मेलन','उत्तरपाड़ा संगीत चक्र', कोलकाता, संगीत नाटक अकादमी द्वारा स्वतंत्रता दिवस की स्वर्ण जयंती पर आयोजित समारोह (1997),'वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट', न्यू यॉर्क सिटी, राज्य अकादमी द्वारा आयोजित मिलेनियम संगीत समारोह (2000), सप्तक स्कूल ऑफ़ म्यूजिक का संगीत महोत्सव (2005) साथ ही 1998 से 2004 तक United States, United Kingdom, Europe तथा Japan में अनेक जुगलबंदी प्रस्तुतियाँ दीं।

गोकुल नाग फाउंडेशन:-

विदुषी मीता नाग ने अपने दादा गोकुल नाग की स्मृति में वर्ष 2002 में एक संस्था की स्थापना की। उनके अनुसार— “इस संस्था की स्थापना का मुख्य उद्देश्य पं. गोकुल नाग के संगीत के प्रति समर्पण को स्मरण रखना है।”17 यह संस्था हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परंपराओं को संरक्षित करते हुए उसके प्रचार-प्रसार का कार्य करती है। इसके माध्यम से युवा कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान किया जाता है। साथ ही समय-समय पर सेमिनार और कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती हैं, जो संगीत विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती हैं। वर्ष 2003 में इसी मंच पर पद्म भूषण गिरजा देवी ने गायन प्रस्तुति दी। इसी मंच से राजन-साजन मिश्रा ने गायन किया।

पुरस्कार:-

1977 में भारतीय संस्कृति संसद, कोलकाता द्वारा ‘बेस्ट इंस्ट्रुमेंटल कलाकार अवार्ड’।

1979 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा ‘नेशनल टैलेंट रिसर्च स्कॉलरशिप अवार्ड’।

1979 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा ‘जूनियर फेलोशिप अवार्ड’।

2005 मेंविश्व भारती यूनिवर्सिटी, शांतिनिकेतन द्वारा ‘रणधीर राय मेमोरियल अवार्ड’।

सुब्रत डे:-

सुब्रत डे का जन्म 20 मई 1969 को जमशेदपुर में उस परिवार में हुआ जहाँ संगीत की पूजा की जाती थी। इनके पिता भूतनाथ डे, जो 84 वर्ष की आयु में भी शास्त्रीय गायन करते रहे हैं। सुब्रत डे ने 7 वर्ष की आयु में सितार वादन की शिक्षा अमरजीत सिंह (जमशेदपुर) से प्राप्त करने के उपरांत भुवनेश्वर के बौरी बंधु सेठी से सितार की सभी तकनीकों का ज्ञान अर्जित किया। इसके बाद बौरी बंधु ने सुब्रत डे को अपने गुरु पंडित मणिलाल नाग के पास आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा।

वादन शैली:-

सुब्रत डे ने विष्णुपुर घराने के पंडित मणिलाल नाग से सितार वादन की शिक्षा कठोर अनुशासन में रहकर गंभीरता के साथ प्राप्त की। इन्होंने मजबूत कंठस्वर जैसी मींड वाली सितार का वादन किया। इन्होंने अपने गुरु से ध्रुपद अंग में आलाप वादन, जोड़ आलाप में बोलकारी अंग का प्रयोग, गतकारी तथा तंत्रकारी अंग आदि की शिक्षा लगन और निष्ठा के साथ प्राप्त की।सुब्रत डे ने शोधार्थी से वार्तालाप करते हुए बताया—“पंडित मणिलाल नाग ने संगीत की शिक्षा देने के साथ-साथ हमें अनुशासन में रहना, कठोर अभ्यास करना, प्रस्तुति के समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए आदि की शिक्षा भी प्रदान की। गुरुजी (पं. नाग) का कहना था कि यदि राग के स्वरूप को अच्छी तरह समझना है तो राग को बहुत समय तक सुनना चाहिए, तभी राग आपके मन में घर कर सकता है।”17

प्रस्तुतियाँ:-

सुब्रत डे ने राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में सितार वादन की प्रस्तुतियाँ देकर विष्णुपुर घराने और अपने गुरु का नाम रोशन किया है। सुब्रत डे ने लगभग 35 देशों में सितार वादन प्रस्तुत किया है, जैसे — Switzerland, Finland, Brazil, Mexico, United States, Australia, Turkey तथा Italy आदि।

संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए कार्य:-

इन्हें Indian Council for Cultural Relations (ICCR) द्वारा संगीतकार एवं अध्यापक के पद पर पैनल में शामिल किया गया, जिसके माध्यम से सुब्रत डे ने भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।आप 1989 से All India Radio (नई दिल्ली) के 'ए ग्रेडेड' कलाकार के रूप में नियुक्त हैं, जो आपकी संगीतात्मक प्रतिष्ठा और निरंतर कलात्मक सक्रियता को दर्शाता है।सुब्रत डे को 1998 में साहित्य काला परिषद नई दिल्ली द्वारा 'युवा कलाकार' के रूप में चुना गया, जो उनकी उभरती हुई कलात्मक पहचान का प्रतीक है।इसके अतिरिक्त 2009 से 2011 तक सुब्रत डे को आई.सी.सी.आर. के अधीन बैंकॉक में सितार अध्यापक और प्रदर्शनकर्ता के रूप में सेवाएँ निभाने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसके माध्यम से उन्होंने भारतीय संगीत का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, "सुब्रत डे ने नए रागों की रचना की, जैसे— Atal Bihari Vajpayee को श्रद्धांजलि स्वरूप राग अटल, Lata Mangeshkar को श्रद्धांजलि स्वरूप राग लता, Jawaharlal Nehru को समर्पित राग नेहरू, Subhas Chandra Bose को समर्पित राग सुभाष तथा इसके अतिरिक्त भूपमालप, वेदांगी, जोगिया रंजनी और गुणप्रभा आदि रागों का निर्माण किया।"18

संस्थापक के रूप में:-

सुब्रत डे ने वर्ष 2000 में 'सुरांजली' संस्था की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य सितार के साथ-साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार करना है। इस संस्था द्वारा 25 वर्षों से निरंतर संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें युवा पीढ़ी को अपनी कला प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है।भारत की अटूट संगीत परंपराओं को बनाए रखने के लिए सुरांजली ने 'संध्या', 'सुर-ताल', 'सुर उत्सव' और 'प्रतिभा मंच' आदि के माध्यम से अनेक समारोह आयोजित किए हैं।प्रत्येक वर्ष सुरांजली मुख्य रूप से घराना फेस्टिवल, 'कलर ऑफ इंडिया', बैठकी, प्रवासी भारतीय संगीत एवं नृत्य महोत्सव, मुरछना फेस्टिवल, झारखंड महोत्सव आदि का आयोजन करती है।

मान-सम्मान:-

सुब्रत डे को प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद द्वारा 'संगीत प्रवीण' की उपाधि से सम्मानित किया गया, जो उनकी संगीत विद्वत्ता और कलात्मक प्रवीणता का प्रमाण है। इसके अतिरिक्त Ministry of Human Resource Development, भारत सरकार द्वारा उन्हें राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रदान की गई, जिससे उनकी प्रतिभा को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली।

निष्कर्ष:-

पंडित मनिलाल नाग की शिष्य-परंपरा भारतीय शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य प्रणाली से जुडी दार्शनिक सोच, सौंदर्यबोध और विद्वत्तापूर्ण सिद्धांतों की स्पष्ट अभिव्यक्ति के रूप में सामने आती है। पं. नाग ने अपने गुरु से प्राप्त संगीत-ज्ञान को निरंतर साधना, गहन रियाज़ तथा शास्त्रीय नियमों को आधार बनाकर अनुशासनपूर्वक अपने शिष्यों में संचारित किया। इस प्रक्रिया में रागों के स्वरूप की शुद्धता, लयात्मक संतुलन और सितार वादन की तकनीकी निपुणता को विशेष महत्व दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप उनके शिष्य अपनी विशिष्ट कलात्मक पहचान स्थापित करने में सफल हुए। उनके प्रमुख शिष्यों में— सौमित्र लाहिड़ी, हेम हवामुरिका, बौरी बंधु सेठी, इंद्रनाथ कोनर, सुब्रत डे, पं. देवोजीत चक्रवर्ती, विदुषी मीता नाग,तेजू कातो तथा सुनीशी सवादा आदि शामिल हैं। इन सभी ने गुरु-परंपरा की मर्यादा को बनाए रखते हुए अपने व्यक्तिगत अनुभव, बौद्धिक दृष्टि और रचनात्मक संवेदना के माध्यम से नए प्रयोग किए।पं. मणिलाल नाग के अनेक शिष्य All India Radio के मान्यता-प्राप्त कलाकार हैं, जैसे—सौमित्र लाहिड़ी (टॉप ग्रेड), देवोजीत चक्रवर्ती (टॉप ग्रेड), विदुषी मीता नाग (टॉप ग्रेड), सुब्रत डे (ए ग्रेड), निबेदिता घोष (ए ग्रेड), इंद्रजीत बनर्जी (ए ग्रेड), हेम हज़ारीका (बी हाई ग्रेड)। सौमित्र लाहिड़ी ने अपने गुरु से प्राप्त सितार वादन की शिक्षा को अपने शिष्यों— श्रीमती कुंतला राय, सौम्यजीत पाल

तथा पं. सोमें भट्टाचार्य आदि के माध्यम से आगे बढ़ाया। उनके शिष्य तेजू कातो जापान में 'गोकुल नाग फाउंडेशन' का संचालन कर रहे हैं तथा वहाँ लगभग 200 विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। इस प्रकार पं. मणिलाल नाग की शिष्य-परंपरा केवल एक संगीत परंपरा नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक धरोहर है, जो साधना, अनुशासन और सृजनशीलता के माध्यम से निरंतर विकसित हो रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. मुख्य संपादक डॉ. प्रेम प्रकाश सिंह तथा सह-संपादक डॉ. स. स. जोशी, संस्कृत-पंजाबी कोश, पृष्ठ 2002।
2. भेंट वार्तालाप, पंडित मनिलाल नाग, कोलकाता, 30-07-2021
3. भेंट वार्तालाप, विदुषी मीता नाग, कोलकाता, 02--08-2021
4. फ़ोन वार्तालाप, हेम हज़ारीका, दिनांक 21-12-2025, समय 7:15 रात्रि।
5. फ़ोन वार्तालाप, शुभांकर हज़ारीका, दिनांक 29-12-2025, समय 6:30 शाम।
6. फ़ोन वार्तालाप, हेम हज़ारीक, दिनांक 21-12-2025, समय 7:15 रात्रि।
7. फ़ोन वार्तालाप, हेम हज़ारीका, दिनांक 21-12-2025, समय 7:15 रात्रि।
8. फ़ोन वार्तालाप, शुभांकर हज़ारीका, दिनांक 29-12-2025, समय 6:30 शाम।
9. फ़ोन वार्तालाप, शुभांकर हज़ारीका, दिनांक 29-12-2025, समय 6:30 शाम।
10. https://www.sentinelassam.com
11. फ़ोन वार्तालाप, शुभांकर हज़ारीका, दिनांक 29-12-2025, समय 6:30 शाम।
12. फ़ोन वार्तालाप, बागेश्वरी, दिनांक 20-12-2025, समय 10:30 प्रातः।
13. फ़ोन वार्तालाप, जीवन प्रकाश घोष, दिनांक 26-12-2025, समय 2:15 दोपहर।
14. फ़ोन वार्तालाप, कौशिक कोंवर, दिनांक 10-11-2025, समय 12.30 दोपहर।
15. भेंट वार्तालाप, विदुषी मीता नाग, कोलकाता, 02--08-2021
16. भेंट वार्तालाप, विदुषी मीता नाग, कोलकाता, 02--08-2021
17. भेंट वार्तालाप, सुब्रता डे, नई दिल्ली, दिनांक 20-08-2022
18. भेंट वार्तालाप, सुब्रता डे, नई दिल्ली, दिनांक 20-08-2022